



उत्तर प्रदेश स्वदेशीयों के दंग स्वदेशी उपहार के संग



वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट योजना आज देश के अंदर एक मॉडल बनी हुई है। आज स्वदेशी अपनाना हम सब लोगों की सबसे बड़ी आवश्यकता है। हमारा ही पैसा अगर हमारे ही कारीगर और हस्तशिल्पियों के पास जाएगा तो यह विकास और समृद्धि का आधार बनेगा। प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करेगी।

-योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश



ओडीओपी योजना के तहत चयनित उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पहचान मिल रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की सोच और नेतृत्व में ओडीओपी योजना को न केवल पूरे उत्तर प्रदेश में सफलता मिली है, बल्कि देश के कई राज्यों ने इसे अपनाया है। यह योजना अब तक लाखों कारीगरों और उद्यमियों को स्वरोजगार का साधन दे चुकी है। लखनऊ की जटिल चिकनकारी कढ़ाई से लेकर वाराणसी की भव्य बनारसी रेशमी साड़ियों, गोरखपुर ज़िलों की नाज़ुक टेराकोटा कृतियों से लेकर सहारनपुर की लकड़ी की नक्काशी तक, राज्य के शिल्प सदियों के कौशल और रचनात्मकता का प्रतीक हैं। उत्तर प्रदेश की मिट्टी की खुशबू, स्थानीय कारीगरों की मेहनत और सदियों पुरानी कला की झलक यूपी के इस योजना की सफलता की कहानी बयां कर रहे हैं। यह पहल न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रही है, बल्कि हर त्योहार को बना रही है और भी खास, क्योंकि लोग अपनों को अपने ज़िले की खास वस्तु भेंट कर रहे हैं और रिश्तों को नया आयाम दे रहे हैं।

अब हम कुछ भी खरीदें तो एक ही तराजू होना चाहिए, हम उन चीजों को खरीदेंगे, जिसे बनाने में किसी भारतीय का पसीना बहा है और जो चीज भारत के लोगों द्वारा बनी है, भारत के लोगों के कौशल्य से बनी है, भारत के लोगों के पसीने से बनी है। हमारे लिए वह स्वदेशी है। हमें वोकल फॉर लोकल मंत्र को अपनाना होगा। हम संकल्प लें कि हम मेक इन इंडिया प्रोडक्ट्स को ही बढ़ावा देंगे।

-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



एक जनपद एक उत्पाद

उत्तर प्रदेश

वाराणसी

बनारसी सिल्क साड़ी
परंपरा की भव्य झलक

बढ़ायूं

जरदोजी हस्तशिल्प
शाही कारीगरी का बेहतरीन तोहफा

लखनऊ

चिकनकारी परिधान
पहनने के लिए आदर्श

अयोध्या

गुड़ मिठाइयां
स्वाद और सेहत का संगम

सहारनपुर

लकड़ी की नक्काशी
हर कोणे को खास बनाएं

हरदोई

हैंडलूम
सादगी में सुंदरता का स्पर्श

भदोही

कालीन
विश्व प्रसिद्ध गिफ्ट विकल्प

गोरखपुर

टेराकोटा दीये
सजावट में परंपरा का स्पर्श

जौनपुर

ऊनी कालीन
घर को दें त्योहारों में गरमाहट

चित्रफूट

लकड़ी के स्थिलौने
लोककला और परंपरा संग उपहार

बाराबंकी

टेराकोटा टी सेट
स्वदेशी सौंदर्य का प्रतीक

ललितपुर

सिल्क साड़ी/फूड प्रोडक्ट्स
स्वाद और स्टाइल दोनों

अलीगढ़

ताले व पीतल के दीये
सुरक्षा व शुभता का संगम

अमरोहा

वाद्य यंत्र व गारमेंट्स
संस्कृति को जीवंत बनाएं

कानपुर/आगरा

लेदर उत्पाद
आधुनिक और टिकाऊ उपहार

कन्नौज

इत्र
प्राकृतिक खुशबू का देसी एहसास

फर्झखाबाद

जरदोजी गिफ्ट आइटम
रिच एंब्रॉडरी की सुंदरता

श्रावस्ती

पारंपरिक फर्नीचर
सांस्कृतिक सजावट का उपहार

मेरठ

खेल सामग्री
बच्चों के लिए खास गिफ्ट

गुरुदाबाद

पीतल के उत्पाद
सुनहरी परंपरा अनमोल विरासत



GeM पोर्टल, ODOP स्टॉल्स, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और स्थानीय हाट बाजारों व
अन्य ऑनलाइन माध्यमों पर उत्तर प्रदेश के ये सभी ODOP उत्पाद उपलब्ध हैं।

हर उपहार में स्वदेशी की खुशबू

शनिवार, 23 अगस्त 2025



तुरंत जीना शुरू करो और हर दिन
को एक अलग जीवन मानो।
-सनेका दयंग, रेमन दाशनिक

दृष्टिरूपी पूर्ण कर सुधार

जीएसटी दरों के रेशेनलाइजेशन पर गठित मंत्री समूह ने केंद्र सरकार के उस प्रस्ताव को अनुमोदित कर दिया है, जिसके तहत वर्तमान चार दरों को घटाकर दो कर दिया जाएगा। उम्मीद है कि इसके प्रति प्रतिबद्ध सरकार इसे अगले वर्ष तक लागू करवा ले। प्रधानमंत्री ने लाल किले से घोषणा की थी कि वे जीएसटी में बदलावों के मध्यम से इस दीवाली आमजन को बड़ा तोहफा देंगे, जो टैक्स को कम करेगा और दैनिक उपभोग की बढ़तुओं को सस्ता बनाएगा। समूह है कि वे अपने बाद ऐसे खेड़े नहीं होंगे। यदि केवल 5 और 18 प्रतिशत के दो स्लैब रह जाएं, तो कर प्रणाली सरल होगी, अनुपालन बढ़ेगा और कर चोरी में कमी आएगी। इन सुधारों से जीएसटी अधिक पारदर्शी और किसानोंका बनेगा। 12 प्रतिशत स्लैब में लाने से आगे उपभोक्ता वस्तुओं के दाम घटेंगे। वहीं, 28 प्रतिशत वाले 90 प्रतिशत समान और सेवाओं को 18 प्रतिशत स्लैब में लाने से वे मध्यम वर्ग की पहुंच में आ सकेंगी। इससे महंगाई में कमी आएगी और सभी वर्गों को राहत मिलेगी।

अब देखना यह है कि सरकार हेल्प इंश्योरेंस कंपनियों के द्वाव के बावजूद हेल्प और लाइफ इंश्योरेंस प्रीमियम पर जीएसटी को पूरी तरह माफ करवा पाती है या नहीं। बीमा कंपनियों को छोड़कर अधिकांश हितधारक इस सुधार के पक्ष में है। आमजन और राज्य सरकारें भी इसका समर्थन कर रही हैं, हालांकि सरकार पेट्रोल पर जीएसटी नहीं लाग सकती, पर यह सुधार तो संभव है। यह सही है कि इस छूट से सरकार को सालाना लगभग 9,700 करोड़ रुपये की राजस्व हानि होगी। प्रस्तावित सुधारों के चलते चालू वितरण में ही 45,000 करोड़ का बाटा हो सकता है और आगे चलाकर यह आकड़ा 85,000 करोड़ प्रतिवर्ष तक पहुंच सकता है, जो निश्चित रूप से बड़ा है। वर्तमान में 18 प्रतिशत स्लैब से केवल 11 प्रतिशत। यह तय है कि स्लैब कम करने से उपभोक्ता मूल्य सुधारकां आधारित महंगाई में लगभग 0.5 प्रतिशत की कमी आ सकती है। एसीबीआई की रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार, उपभोग और टैक्स कटौती के कारण खरीदारी बढ़ेगी, जिससे अधिक वर्ग में लगभग दो लाख करोड़ रुपये का इजाफा होगा और राजस्व की भरपाई संभव हो सकेगी। फिलहाल राज्यों की आवित्यों का समाधान शेष है, चूंकि जीएसटी राज्य और केंद्र सरकार का राज्यों के साथीयों के साथाधान शेष है, चूंकि जीएसटी राज्य और केंद्र सरकार का राज्यों के साथीयों के साथाधान शेष है, तभी काउंसिल इस प्रस्ताव के 75 प्रतिशत बहुमत से पारित कर सकेगी। सहमति के बाद जीएसटी कानन में संशोधन आवश्यक होगा और राज्य सरकारों को इसे लागू करने से पहले आवश्यक कानूनी प्रशासनिक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करनी होगी। टैक्स कोड और सोन्पटवेयर अपडेशन जैसे तकनीकी कदम उठाने के लिए समय देना होगा। दरों के लागू होने की तिथि तय करने के बाद कारोबारियों और उपभोक्ताओं को पूर्ण सुचना भी देनी होगी। बेशक, सफर थोड़ा लंबा है, पर दिशा सही है।

प्रसंगवता

शिव और भस्मासुद की कहानी कहता 'गवरी'

अग्रवली की घाटियों में बसे राजस्थान के 'भील' वनवासियों का अनीत अन्त्यं गौरवशाली रहा है। एकलव्य की संतान माने जाने वाले ये भील महाराणा प्रताप की गोरिला फौज के बहादुर सैनिक थे। मेवाड़ राजवंश के राज-चिन्ह में भील को 'भील राणा' के रूप में तीर-कमान लिए रक्षक के रूप में दिखाया गया है। अपने अंगूठे के रक्त से नये महाराजाओं के राजनितिक का विशेषाधिकर तक मिला हुआ था उन्हें। राजस्थान के इन्हीं भीलों का पंपरागत लोकनाट्य है - 'गवरी'। गवरी को लोक-मानस में 'राई' के नाम से भी जाना-पहचाना जाता है। शिव और भस्मासुद की कहानी गवरी की मूल कथा मानी जाती है। गवरी में जो दृश्य अभिनीत किए जाते हैं, वे खेल, भाव अथवा सांग के नाम से पुकारे जाते हैं। गवरी के मूल मैं नृत्य की प्रधानता रही है, जो आज भी देखी जा सकती है। प्रत्येक भील परिवार का सदस्य इसमें भाग लेना अपना नैतिक और धार्मिक कर्तव्य समझता है। फलतः गवरी में कलाकारों की संख्या चालीस-पाँचास से लगाकर सौ से भी ज्यादा तक हो जाती है।

मुहूर्त के अनुसार प्राप्त रक्षावंधन के बाद आने वाली ठंडी रात्यों के दिन सही गवरी प्रारंभ हो जाती है, जो लगभग 40 दिनों तक अनवर्त चलती है। प्रत्येक भीली गांव में इस समय गवरी नाचना अनिवार्य सा है। जिस गांव में गवरी की मूल कथा मानी जाती है, अकाल पड़ने, भयंकर भूकृप आने, आग लग जाने, चोरी-डाका पड़ने एवं हरी-भींगी खेती नष्ट हो जाने की आंशका रहती है, ऐसी भील सुमुद्राय की मान्यता है। भारत में कहीं भी ऐसा लोकनाट्य नहीं मिलेगा, जो इन्हीं लंबी अवधि तक पात्रों के इन्हें बड़े समूह के साथ विविध गांवों में इन्हें सुव्यवस्थित ढंग से सुर्योदय से सुर्यास्त तक प्रदर्शित किया जाता है। इसके बदल पर भगवा साफ बधा होता है। कमर में बड़े-बड़े घुंघरू बंधे रहते हैं। बूँदिया अपने मुंह पर भयानक मूँहाई बांधे रहता है। इसके हाथ में लकड़ी की बनी तलवर होती है।

यह प्रत्येक स्वांग के बदले और अंत में दूसरे कलाकारों के विपरीत दिशा में नृत्य करता है। बूँदिये के साथ दो 'राया' होती हैं, जिनमें अलौकिक शक्तियों का प्रवेश रहता है। वे मूँह को इस प्रकार बांधे रहती हैं कि केवल अंगूठी ही दिखाई पड़ती हैं। दो थोंगे होते हैं, जिनके गले में देवाकांजों के प्रतीक चिन्ह बंधे रहते हैं। ये हाथ में मोर-पंख, लोह-जंजीर आदि रखकर देवाकांजों से नृत्य परिसर में उपस्थित रहने के लिए प्रार्थना करते हैं।

गांव का कोई मैदान, चौराया अथवा खुला आंगन ही गवरी का रंगमंच होता है। जहां-जहां गवरी वाले गांव की बहिन-बेटियां ब्याही हुई होती हैं, वहां-वहां इसके प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं। गवरी में चार प्रकार के पात्र होते हैं, जिनमें देवपात्र, मानव पात्र, दानव पात्र एवं पशु पात्र होते हैं। देवपात्र सभी प्रकार के विकारों से रहित आदर्श के प्रतीक एवं कलाजीय होते हैं। गवरी में मानव पात्रों की बहलता होती है, जिनमें कंजर, नट, भोजा, संकरण, बूँदिया, खेतूड़ी, देवर, भोजाई, बादशाह, बियांग, तकथा खड़ल्या भूत गवरी के दानव-पात्र हैं। इनका रूप भयानक होता है। सूअर, रीढ़ तथा शेर गवरी होते हैं। गवरी में कभी पुरुष पात्रों को अपने मनोकूल संचालित करने का प्रयत्न करने हैं एवं सुष्टुप्ति पर कब्जा करना चाहते हैं। गवरी में ये पात्र धाइ-फाइ करते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन अंत में कालक्रम ऐसा

संविधान संशोधन बिल: बदलाव की उठमीटें और शंकाएं



सुनील कुमार महत्रे
स्वतंत्र प्रतिकार



हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में नया विधेयक पेश किया। पेश किए गए विधेयक- संविधान संशोधन संशोधन संबंधी ने अपने आपको कानून के दायरे में लाने का संविधान संशोधन पेश किया और दूसरी ओर कानून के दायरे से बाहर रहने, जेल से सरकारे चलाने और कुर्सी का मोहन छोड़ने के लिए कांग्रेस के नेतृत्व में पूरे विपक्ष ने इसका विरोध किया। अमित शाह ने इंदिरा गांधी के नेतृत्व में एक सामान्य व्यक्ति को हमारे देश में कोई नीकी तक नहीं दी जाती है, तो देश के नेतृत्वों के साथ भी ऐसा कुछ प्रवाधन विधेयक लाकर प्रधानमंत्री के विरुद्ध में एक सामान्य व्यक्ति को हमारे देश में कोई नीकी तक नहीं दी जाती है। आज हमारे देश में अनेक दायरों ने अपनी राजनीति और राज्यव्यवस्था में लगभग 9,700 करोड़ रुपये की राजस्व हानि होगी। प्रस्तावित सुधारों के चलते चालू वितरण में ही 45,000 करोड़ का बाटा हो सकता है और आगे चलाकर यह आकड़ा 85,000 करोड़ प्रतिवर्ष तक पहुंच सकता है, जो निश्चित रूप से बड़ा है। वर्तमान में 18 प्रतिशत स्लैब से केवल 11 प्रतिशत। यह तय है कि स्लैब कम करने से उपभोक्ता मूल्य सुधारकां आधारित महंगाई में लगभग 0.5 प्रतिशत की कमी आ सकती है। एसीबीआई की रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार, उपभोग और टैक्स कटौती के कारण खरीदारी बढ़ेगी, जिससे अधिक वर्ग में होगी। फिलहाल राज्यों की आवित्यों का समाधान शेष है, चूंकि जीएसटी राज्य और केंद्र सरकार का राज्यों के साथीयों के साथाधान शेष है, तभी काउंसिल इस प्रस्ताव के 75 प्रतिशत बहुमत से पारित कर सकेगी। सहमति के बाद जीएसटी कानून में संशोधन आवश्यक होगा और राज्य सरकारों को इसे लागू करने से पहले आवश्यक कानूनी प्रशासनिक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करनी होगी। टैक्स कोड और सोन्पटवेयर अपडेशन जैसे तकनीकी कदम उठाने के लिए समय देना होगा। दरों के लागू होने की तिथि तय करने के बाद कारोबारियों और उपभोक्ताओं को पूर्ण सुचना भी देनी होगी। बेशक, सफर थोड़ा लंबा है, पर दिशा सही है।

बाद में एक्स पर पोस्ट करते हुए अमित शाह ने कहा, 'एक ओर प्रधानमंत्री ने नेतृत्व के लिए विधेयक- संविधान संशोधन पेश किया और दूसरी ओर कानून के दायरे से विरोध किया।' अमित शाह ने इंदिरा गांधी के नेतृत्व में एक सामान्य व्यक्ति को हमारे देश में एक सामान्य व्यक्ति को हमारे देश में कोई नीकी तक नहीं दी जाती है। आज हमारे देश में अनेक दायरों ने अपनी राजनीति और राज्यव्यवस्था में लगभग 9,700 करोड़ रुपये की राजस्व हानि होगी। प्रस्तावित सुधारों के चलते चालू वितरण में ही 45,000 करोड़ का बाटा हो सकता है और आगे चलाकर यह आकड़ा 85,000 करोड़ प्रतिवर्ष तक पहुंच सकता है, जो निश्चित रूप से बड़ा है। वर्तमान में 18 प्रतिशत स्लैब से केवल 11 प्रतिशत। यह



एशिया कप के लिए भारत की टी20 अंतर्राष्ट्रीय टीम में श्रेयस अयर को जगह नहीं मिलना दिखाता है कि इस देश में प्रतिभावन खिलाड़ियों के विवरण में कोई कमी नहीं है। आपको अपनी टीम में विकल्पों को लेकर काफी सज्ज होना पड़ेगा। -रेस डेलर

हाईलाइट

हसन की बांगलादेश टीम में वापसी

दाका : बांगलादेश के चयनकर्ताओं ने श्रुक्वार को विकेटकीपर-बल्लेबाज नुरुल हसन को आगामी एशिया कप के लिए अपनी 16 सदस्यीय टीम में शामिल किया है। इसमें लिटन दास टीम की कमान सम्मानोंगे। इकतीस वर्षीय हसन ने अखियरी बार तीन साल पहले ऑस्ट्रेलिया में 2022 में होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के दौरान टी20 अंतर्राष्ट्रीय में खेला था। टीम इस प्रपर है: लिटन दास (कर्तव्य), जेकर अली अनिक, शमीम हुसैन, काजी नुरुल हसन सोहन, शाक महेन्द्र हसन, रिशाद हुसैन, नसुम अहमद, मुस्तफ़िज़ुर रहमान, तीमी हसन साकिब, तस्कीन अहमद, शोरफ़ुल इस्लाम, शेफ़ उद्दीन।

विकल्प की अधिकता के कारण अच्युत बाहर

नई दिल्ली : न्यूज़ीलैंड के पूर्व बल्लेबाज रॉस टेलर ने श्रुक्वार को यहां कहा कि एशिया कप के लिए भारत की टी20 अंतर्राष्ट्रीय टीम में श्रेयस अयर को जगह नहीं मिलना दिखाता है कि इस देश में प्रतिभावन खिलाड़ियों के विकल्प में कोई कमी नहीं है। अच्युत ने घरेलू क्रिकेट में लगातार शानदार प्रदर्शन किया है। टेलर कहा था कि अभी तक टीम नहीं देखी है, इसलिए कुछ कह नहीं सकता। जब अपने इस तरह के बहतरीन खिलाड़ी को बाहर रख सकते हैं, तो आपको अपनी टीम में विकल्पों को लेकर काफी सहज होगा।

एशिया कप में भारत नहीं आएंगे सोहले

नई दिल्ली : पाकिस्तान के हांकी खिलाड़ी व मरेशीयाई पुरुष टीम के ड्रेग प्लिक को बाहर सोहले अब्बास अगले सप्ताह बिहार के राजीव और मोहन वाले पाकिस्तानी टीम के साथ नहीं आएंगे। हांकीक उहोंने कहा कि इसका पाकिस्तानी टीम के बारे में नहीं खेल सके कोई सोरकार नहीं है। एशिया कप पुरुष हॉकी टूर्नामेंट राजीव और मोहन से 29 अगस्त से सात सिंतंबर तक खेल जाएगा। जो अगले साल नीदरलैंड और बेल्जियम में होने वाले विश्व कप के लिए सीधे विकल्पीकृत करने का मौका भी होगा।

प्रो कबड्डी लीग के प्रारूप में बदलाव

मुंबई : प्रो कबड्डी लीग (पीएल) ने 29 अगस्त से शुरू होने वाले 12वें सत्र के लिए श्रुक्वार को प्रारूप में बदलाव की घोषणा की। विकल्पों को और अधिक रोमांच देखने की मिले। आगामी सत्र विश्वासन, जयपुर, वेन्ड्साइट और दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इसमें 108 मैच का रोमांचक टीम और एक गोल कर बांगलादेश से 2-0 से हारकर सेप्टेंबर-अक्टूबर-2017 महिना विप्रियनशिप में लगातार दूसरी जीत दर्ज की। भारत ने पूरे मैच में बदलाव बनाए रखा जिसमें पल फ़ाइडेस (1 वर्ष मिनट) और बोनिंगलिंग (7 वर्ष मिनट) ने गोल किए। इसके बारे में अपना शीर्ष स्थान मजबूत किया।

भारत ने सैक अंडर-17 चैपियनशिप जीती

सिम्पू : भारतीय महिला फुटबॉल टीम ने श्रुक्वार को यहां प्रत्येक टीम में एक-एक गोल कर बांगलादेश से 2-0 से हारकर सेप्टेंबर-अक्टूबर-2017 महिना विप्रियनशिप में लगातार दूसरी जीत दर्ज की। भारत ने पूरे मैच में बदलाव बनाए रखा जिसमें पल फ़ाइडेस (1 वर्ष मिनट) और बोनिंगलिंग (7 वर्ष मिनट) ने गोल किए। इसके बारे में अपना शीर्ष स्थान मजबूत किया।

सूचि और प्रिया ने जीते रजत पदक

समोकोव (बुनारिया) : भारतीय महिला पहलवान सूचि और प्रिया ने अंडर-20 विश्व कुश्ती वैष्णविनशिप में अपने बारे में बारे में रजत पदक जीते हैं। आज वहीं सूचि को 68 किलोग्राम भार वर्ग में खिलाड़ी मुकाबले में जापान की कोशिनों रे से 0-7 से हारकर रजत पदक से संतुष्ट करना पड़ा। जबकि 76 किलोग्राम भार वर्ग में प्रिया को यूक्रेन की ओपोलोवस्का नाडिया 0-4 से हारा का सामना करना पड़ा। इसके अलावा भारत की काजल 72 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में जापान की यूक्रेनी लियो रेमिनीगोंगे के 57 प्रतिविस्तरस औपेंगोंगे की फैलिंगस विनेंगोंगे को 5-2 से हारकर वर्षीय पदक जीता था।

बेंगलुरु से छिन गई महिला विश्व कप मैचों की मेजबानी

नवी मुंबई के डीवाई पाटिल में खेले जाएंगे बेंगलुरु वाले मुकाबले

नई दिल्ली, एजेंसी

अगले महीने शुरू होने वाले महिला एक दिवसीय विश्व कप के बेंगलुरु में होने वाले मैच अब नवी मुंबई में खेले जाएंगे। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने अप्रत्यक्षित परिस्थितियों का हवाला देते हुए श्रुक्वार को यह घोषणा की। यह निर्णय बेंगलुरु स्थित एम चिनास्वामी स्टेडियम के आवश्यक प्रशासनिक और सुरक्षा मंजूरी प्राप्त करने में विपल रहने के बाद लिया गया। इस कारण चिनास्वामी स्टेडियम 30 सितंबर से शुरू होने वाले टूर्नामेंट के मैचों की मेजबानी के लिए अयोग्य हो गया है।



बेंगलुरु स्थित एम चिनास्वामी स्टेडियम।



इंदौर पहुंची महिला विश्व कप ट्रॉफी

इंदौर (मध्यप्रदेश) : भारत का सबसे रवाना शहर इंदौर आगामी महिला विश्व कप स्थान के पांच मुकाबलों की मेजबानी करेगा।

आर इसके लिए शहर के होलकर स्टेडियम में बुरुसायी ढांचे को कारीब 15 करोड़ रुपये के खर्च से बनवाया किया जाएगा।

भारतीय महिला विश्व कप ट्रॉफी के लिए इंदौर की वायर को यह जारी करनी चाही थी।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प्रारूप एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के दिवसीय मैचों के प